ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

मध्यप्रदेश की अनुसूचित जातियों के लिए उच्च शिक्षा के विकास में चुनौतियाँः डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संदर्भ में एक विश्लेषण

Challenges in the Development of Higher Education for the Scheduled Castes of Madhya Pradesh" An Analysis in the context of Dr. Bhimrao Ambedkar

Paper Submission: 10/08/2021, Date of Acceptance: 23/08/2021, Date of Publication: 24/08/2021

आनंद कुमार भारतीय
अतिथि विद्वान,
राजनीति शास्त्र विभाग,
शास० कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय, गुना,
मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर भारत के निर्माण में सभी क्षेत्रों की प्रगति के साथ सामाजिक समरसता चाहते है। उन्होंने दलितों की दयनीय स्थिति के सुधार हेतु शिक्षा एवं उच्च शिक्षा को सर्वाधिक महत्व दिया। उनका मानना था कि उच्च शिक्षित व्यक्ति अपना, अपने परिवार, अपने समाज व अपने देश का सर्वांगीण विकास कर सकता है। उन्होंने सविंधान में समस्त वर्गों के लिये समानता के साथ शिक्षा के द्वार खोल दिए। आज देश की आजादी के 74 वर्षों बाद जो भी शिक्षा और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुसूचित जाति ने जो प्रगति की है उसके मूल में बाबा साहब द्वारा संविधान में दिये गये प्रावधान ही है। उनका पहला वाक्य ही शिक्षित बनो से शुरू होता है।

Bharat Ratna Dr. Bhimrao Ambedkar wants social harmony with the progress of all sectors in the making of India. He gave utmost importance to education and higher education to improve the pathetic condition of Dalits. He believed that a highly educated person can do all round development of himself, his family, his community and his country. He opened the doors of education with equality for all classes in the Constitution. Today, after 74 years of the country's independence, whatever progress has been made by the Scheduled Castes in the field of education and higher education, at its root is the provision given by Baba Saheb in the Constitution. His first sentence itself begins with Be educated.

मुख्य शब्द : शिक्षित बनो।
Be educated.

प्रस्तावनाः

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का मानना था कि "समाज में शिक्षा समानता ला सकती है। जब मनुष्य शिक्षित हो जाता है तो उसमें विवेक, सोचने की शक्ति पैदा हो जाती है तब न वह खुद पर अत्याचार सह सकता है और न दूसरों पर अत्याचार होता हुआ देख सकता है।"

शिक्षा का विश्वव्यापीकरण - भारत की शिक्षा का यह युग लुप्त हो चुका था जब अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जिज्ञासु भारत में आकर नालंदा तक्षशिला और विक्रमशिला के बौद्धिक वातावरण की खुली हवा का आनंद लेते थे। विध्वंश हो चुका था उस वातावरण का उन पुस्तकालयों का। भूल चुके - वेदो, त्रिपिटकों और गीता को और उन्हें जानने को हमें परमुखापेक्षी होना पड़ा पश्चिम का। गांधीजी नेहरू जी और अम्बेडकर जी, तीनों ही पाश्चातय-शिक्षाविद-"बैरिस्टर बनकर भारत लौटे थे न केवल अंग्रजों से लोहा लिया वरन भूसे में चिंगारी का कार्य करने में अनेक सहयोगियों के साथ देश के अग्रणी मार्गदर्षक बने।

डॉ. अम्बेडकर जी का भारत के शोषित, दलित-समाज से कहना था कि- तुम दीपक समान स्वयं प्रकाशित बनों, पृथ्वी की तरह पर प्रकाशित नहीं। अपने आपर ही विश्वास रखों और किसी दूसरे के अधीन बनो। सत्स पर चला। सत्य का ही आय लो। दूसरों की शरण में न जाओं। "

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा उच्च शिक्षा का सीधा अर्थ है विश्व की प्रमुख घटनों के सन्दर्भ में अपने देश का मूल्यांकन कर अपने देश का स्थान नियत करना। सीमित शिक्षा से संकुचित मनोवृतित का निर्माण होता है।

स्पष्ट यह है कि संसार की राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक परिवर्तनों की पृष्ठभूमि को जानकर ही शिक्षा के क्षेत्र की एक नई रोशनी दलित वर्गों का मार्ग तय करने में सक्षम हो सकती है। शिक्षा प्राप्ति का अन्य कोई उपाय था ही नहीं इसलिये बाबा साहब शिक्ष के क्षेत्र में भारत के बाहर जाकर खुले वातावरण की शिक्षा प्रापित के प्रबल समर्थक थे, उन्होंने कई विद्यार्थियों को शासकीय व्यय पर विदेश शिक्षा प्राप्त करने के लिये भिजवाया।

जब श्री सी राजगोपालाचारी शिक्षा मंत्री बने तो उन्होंने विदेशो में अछूत छात्रों को शिक्षा ग्रहण करने के लिये भेजने वाली सरकारी नीति को ही बदल दिया। राजगोपालाचारी पाप के काम को पुण्यशाली साबित करनेमें बड़े सिद्धहस्त थे। इसीलिये उन्होंने अछूतों की उन्नति की राह को रोका और उसे पुण्य का काम बताया यह खेद की बात है कि अब हर वर्ष केवल दो या चार अछूत विद्यार्थियों को

ही विदेशो में भेजा जाता है। [2]

5 नवम्बर 1948 के दिन संविधान सभा के अधिवेशन में श्री टी.टी. कृष्णामचारी ने कहा था - इस संविधान की रचना की सारी जिम्मेदारी केवल डॉ. अम्बेडकर के कंधों पर पड़ी है। उन्होंने जिस निष्ठा एवं श्रद्धा के साथ उसे निभाया है उसके लिये सदन ही नही, बल्कि सारा देश उनका कृतज्ञ रहेगा।[3]

उच्च शिक्षा के लिये किये गये प्रयत्न

ब्रिटिश शासनकाल में वायसराय की कौसिल का में मेम्बर था लार्ड लिनलिथगो वायसराय थे। सामान्य शिक्षा के लिये एक निश्चित धनरा आबंटित होती थी। उसमें से तीन लाख रूपये मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ और इतनी ही धनराशि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को स्वीकृत थी। एक दिन वायसराय से बातचीत के दौरान मैनें इस विषय को उठाया। मैं वायसराय से बोला कि तीन लाख रू. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और इतना ही धन बनारास हिन्दू विश्वविद्यालय को उपलब्ध किया गया है। अछूत न तो हिन्दू है और नही मुसलमान। वे लोग इन दोनो कौमों से कहीं अधिक पिछड़े हुए है। अनुसूचित जाति के लोगो की शिक्षा के लिये जनसंख्या के अनुपात में धनराशि आबंटित की जानी चाहिए। लार्ड लिनलिथगो ने मुझसे कहा था कि इस संबंध में जो कुछ भी कहना चाहता हूँ उसे लिखित रूप में दूँ। मैंने एक मैमोरेण्डम प्रस्तूत किया योरोपियनों का दृष्टिकोण सामान्यतया सहानुभूतिपूर्ण था। उन्होंने मेरे प्रस्ताव पर सहमति प्रकट की और अनुसूचित जाति की शिक्षा के लिये तीन लाख रू. स्वीकार किये। अब सवाल पैदा हुआ कि इस धनराशि का इस्तेमाल कैसे हो ? वायसराय चाहते थे कि इस धनराशि को अनुसूचित जाति की बालिकाओं की शिक्षा पर व्यय किया जाए और उन बालिकाओं के लिये छात्रावास के निर्माण किये जाने का परामर्ष दिया।

इस दरम्यान सरकार अन्य मदों पर धनव्यय करती रहही, लेकिन अनुसूचित जाति की शिक्षा के लिये निर्धारित धनराशि को रोके रही। एक बार फिर मै लार्ड लिलिथगों के पास गया और इस मुद्दे पर सीधी वार्ता की। मैंने वायसराय से सवाल किया - लार्ड लिनलिथगो क्या मैं 500 ग्रेज्युएट्स से बेहतर नहीं हूँ ? हाँ। वास्तव में आप है लार्ड लिनलिथगो ने उत्तर दिया। तब मैने उनसे पूछा। आप कारण जानते है मैं ऐसा क्यों कहता हूँ ? वह नहीं जान पाये। मुझे वायसराय से स्वीकार कराना था कि विदेश के विश्वविद्यालय का शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भारत के विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त एक साथ पचासों ग्रेज्युएट्स की अपेक्षा अधिक योग्य होता है। मैं स्वयं 500 ग्रेज्युएट्स व्यक्ति के बराबर हूँ। मेरी शिक्षा इतनी गहन है कि मैं आत्मविश्वास के साथ किसी भी सरकारी पद को चला सकता हूँ। मुझे ऐसे ही योग्य लोगों की आवश्यकता है जो अधिकार के पदों पर आरूढ़ होने में सक्षम हो। जिससे कि वे अपने समुदाय के उत्थान के लिये प्रभावी रूप से काम कर सकें। अछूतों के लिये यदि सचमुच आप कुछ करना चाहते है तो आपको ऐसे लोगों को पैदा करना होगा जो उनकी दशा को सुधारने में कामयाब हो। महज क्लर्क पैदा करने से उद्देश्य की पूर्ति नहीं होगी।

लार्ड लिनलिथगो मेरे सुझाव पर सहमत हुये और परिणामस्वरूप अनुसूचित जाति के 16 लड़के उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये विदेश भेजे गये । इन 16 लोगों में से कुछ ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया और कुछ ने नहीं, वे अधकचरे ही रहे और घर लौट आये। इसका कारण है कि हिन्दू धर्म में अनुसूचित जाति के लिये उत्साह है ही नहीं, जबकि ब्राम्हण और अन्य सवर्ण जातियों के लिये वहां उत्साहवर्द्धक वातावरण है। आनंदपूर्ण वातावरण के अभाव के अलावा भी हिन्दू धर्म में मनुष्य के विकास के लिये न समानता है और न ही एकरूपता। शूद्र से उत्तम वैश्य, वैश्य से उत्तम क्षत्रिय और क्षत्रिय से उत्तम ब्राम्हण समझा जाता है। मानव, मानव समान है का आधार नहीं है। हमें नहीं पता है कि हिन्दू धर्म में अधम स्थिति से हम कब छूटकारा पावेंगे।[4]

स्वतंत्रता के बाद कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना के अतंर्गत शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों की संख्या निश्चित तौर पर बढ़ी है किंतु उच्च शिक्षा ग्रहण करने योग्य युवाओं का बड़ा हिस्सा भारी भरकम फीस के कारण आज भी उच्च शिक्षा से वंचित है, अपने चरम को प्राप्त नहीं कर पा रहा है। निजी शिक्षण संस्थायें शिक्षा के विकास के लिये कम स्वयं के आर्थिक विकास के लिये ज्यादा कार्य कर रही है। ऐसा प्रतीत होता है। शिक्षा अब दान की वस्तु नहीं बल्कि व्यापार का माध्यम हो गई है।

शिक्षकों का काम अब सोचना नहीं सिर्फ करना रह गया है। उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका तात्कालिक जरूरतें पूरी करने के लिये प्राशिक्षण केन्द्रों सी हो गई है। स्वरोजगार व जीविका अर्जित करने में तो कुछ हद तक सक्षम है, किन्तु शिक्षा-जगत के दीर्घकालिक हितों में नहीं है।

विदेशी विश्वविद्यालयों को देश में आने और पैर पसारने की अनुमति देने से यहाँ की शिक्षा व्यवस्था में कुछ सुधार होगा। यदि इसका मकसद महज मुनाफा है तो यह घोर आपत्तिजनक है।[5]

राष्ट्रपति का बेटा हो या हो श्रमिक की संतान।
हो अमीर या गरीब का बेटा, सब की शिक्षा एक समान॥

यदि हम दूरदर्शी नीति को लागू करते है, राष्ट्र निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक, जागरूक अभिभावक व जिज्ञासु विद्यार्थी आपसी समन्वय का प्रण करते है तो इस विकासशील देश भारत को डॉ. कलाम के सपनों का भारत बनने से कोई नहीं रोक सकता।

अध्ययन का उद्देश्य

मध्य प्रदेश के अनुसूचित जातियों के लिए उच्च शिक्षा के विकास में अनुसूचित जाति ने जो प्रगति की उसके मूल्य में बाबा साहब द्वारा संविधान में दिए गए प्रावधान ही है उन सभी प्रावधानों से जागरूक कराना लेखक के शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष

व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्व है शिक्षा सांस्कृतिक प्रक्रिया हैं, समाजीकरण का माध्यम है शोषण से मुक्ति मार्ग है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दिनकर, डी.सी. ; डॉ. अम्बेडकर स्मृति ग्रंथ, प्रकाशक बोधिसत्व प्रकाशन, लखनऊ, पृ. 118*
2. *शास्त्री, शंकरानंद ; पूना पैक्ट बनाम गांधी, प्रकाशक बहुजन कल्याण प्रकाशन सआदतगंज, लखनऊ-3, पृ. 184*
3. *कीर, धनंजय ; डॉ. अम्बेडकर का जीवन मिशन, स्मृति ग्रंथ, पृ. 384*
4. *जिज्ञासु जयंत ; भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली।*
5. *मूर्ति, एस ; सामाजिक दर्शन, कल्चरल पब्लिशर्स अमीनाबाद, लखनऊ-18, पृ. 44*
6. *जिज्ञासु, जयंत ; भारतीय जनसंचार संस्थान नई दिल्ली।*